दोहा - 25

तो पर वारौं उर्वशी, सुनि राधिके सुजान।

तू मोहन के उर बसी, है उर्वशी समान॥ २५॥”

प्रसंग सहित व्याख्या

प्रसंग

यह दोहा बिहारी सतसई के श्रृंगार प्रसंग से लिया गया है। यहाँ सखी राधा से संबोधित होकर उसके सौंदर्य और महत्व का वर्णन कर रही है।

शब्दार्थ

- वारौं = न्यौछावर कर दूँ
- उर्वशी = स्वर्ग की अप्सरा, अत्यंत सुंदर स्त्री
- मोहन = श्रीकृष्ण
- उर = हृदय
- सुजान = बुद्धिमान, चतुर

व्याख्या

सखी कहती है — हे सुजान राधिका! मैं तुम पर स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी को भी न्यौछावर कर दूँ।

क्योंकि तुम तो स्वयं मोहन (श्रीकृष्ण) के हृदय में बसी हुई हो, इसलिए तुम उर्वशी के समान (बल्कि उससे भी बढ़कर) हो।

अर्थात् राधा का सौंदर्य और प्रेम इतना अद्‌वितीय है कि स्वर्ग की प्रसिद्‌ध सुंदरी उर्वशी भी उसके सामने तुच्छ है। राधा का सबसे बड़ा गुण यह है कि वह श्रीकृष्ण के हृदय में निवास करती है — यही उसकी श्रेष्ठता है।

भाव

- राधा की महिमा और सौंदर्य का गुणगान।
- प्रेम की श्रेष्ठता का वर्णन।
- श्रृंगार रस की प्रधानता।

अलंकार

- उपमा अलंकार — राधा की तुलना उर्वशी से।
- अतिशयोक्ति अलंकार — उर्वशी को राधा पर न्यौछावर करना।

निष्कर्ष

इस दोहे में बिहारी ने राधा के सौंदर्य और उसके प्रेम की महानता को अत्यंत संक्षेप में प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। राधा का गौरव इस बात में है कि वह श्रीकृष्ण के हृदय में निवास करती है।

दोहा - 32

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।

भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सों बात॥ ३२॥”

प्रसंग सहित व्याख्या

प्रसंग

यह दोहा बिहारी सतसई के संयोग-श्रृंगार प्रसंग से लिया गया है। इसमें नायक-नायिका के नेत्रों के माध्यम से होने वाले प्रेम-संवाद का अत्यंत सुंदर चित्रण है। वे सभा (भरे भौन) में उपस्थित हैं, जहाँ खुलकर बात करना संभव नहीं है, इसलिए वे आँखों से ही संवाद करते हैं।

शब्दार्थ

- कहत = कहते हुए
- नटत = अभिनय करते हुए
- रीझत = प्रसन्न होते हुए
- खिझत = रुष्ट होते हुए
- मिलत = मिलते हुए
- खिलत = प्रसन्न होकर खिलते हुए
- लजियात = लज्जित होते हुए
- भरे भौन = भरी हुई सभा / घर
- नैनन ही सों बात = आँखों से ही बातचीत

व्याख्या

कवि कहते हैं कि नायक और नायिका भरी सभा में रहते हुए भी अपनी आँखों से ही अनेक प्रकार की बातें कर लेते हैं।

कभी वे आँखों से कुछ कहते हैं, कभी अभिनय करते हैं, कभी एक-दूसरे पर रीझते हैं, कभी खिन्न होने का भाव प्रकट करते हैं। कभी मिलन का संकेत देते हैं, कभी हँसते और खिलते हैं, तो कभी लज्जित हो जाते हैं।

अर्थात् उनके नेत्र ही उनके भावों के माध्यम बन जाते हैं। बिना शब्दों के ही वे अपने प्रेम, मान, रोष, संकोच आदि सभी भावों को व्यक्त कर देते हैं।

भाव

- संयोग-श्रृंगार का सुंदर चित्रण।
- प्रेम में नेत्रों की भाषा का महत्व।
- प्रेमियों के सूक्ष्म मनोभावों की अभिव्यक्ति।

अलंकार

- अनुप्रास अलंकार – “कहत, नटत, रीझत, खिझत...” में ‘त’ ध्वनि की पुनरावृत्ति।
- श्लेष / क्रिया-वैचित्र्य – एक ही माध्यम (नयन) से अनेक क्रियाएँ।
- श्रृंगार रस की प्रधानता।

निष्कर्ष

इस दोहे में बिहारी ने अत्यंत संक्षिप्त शब्दों में प्रेमियों के नेत्र-व्यवहार का सजीव चित्रण किया है। यह उनकी काव्य-कुशलता का उत्कृष्ट उदाहरण है कि मात्र दो पंक्तियों में प्रेम के अनेक मनोभावों को प्रस्तुत कर दिया।

दोहा - 34

“पाँय महावर देन कौ नाइन बैठी आय।

फिरि फिरि जानि महावरि, एड़ी मीड़ति जाय॥ ३४॥”

प्रसंग

यह दोहा संयोग-श्रृंगार प्रसंग का है। नायिका के पैरों में महावर (लाल रंग) लगाने के बहाने नाइन (नाईन) बैठी है। कवि ने यहाँ सौंदर्य और चंचलता का चित्रण किया है।

शब्दार्थ

- महावर = पैरों में लगाया जाने वाला लाल रंग
- नाइन = नाई की पत्नी
- मीड़ति = रगड़ती हुई
- एड़ी = पैर का पिछला भाग

व्याख्या

कवि कहते हैं कि नाइन नायिका के पैरों में महावर लगाने के लिए बैठी है। परंतु नायिका के पैरों की एड़ियाँ स्वाभाविक रूप से इतनी लाल हैं कि नाइन बार-बार यह सोचकर एड़ियों को रगड़ती जाती है कि महावर ठीक से लगा या नहीं।

अर्थात् नायिका के चरण इतने कोमल और लालिमा से भरे हैं कि कृत्रिम श्रृंगार की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

भाव

- नायिका के चरणों की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन।
- श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति।

अलंकार

- अतिशयोक्ति अलंकार – स्वाभाविक लालिमा को महावर से भी अधिक बताना।
- चित्रात्मकता – दृश्य अत्यंत सजीव बन पड़ा है।

दोहा - 35

“मोहि निरमोही, वच्यो न हीं, हिय सों आय।

कछुक भए नैनन कहत, कहत न आवत आय॥ ३५॥”

(पंक्तियाँ पुस्तक के अनुसार थोड़े भेद के साथ हो सकती हैं)

प्रसंग

यहाँ नायिका या नायक प्रेम की उलझन व्यक्त कर रहा है। सामने प्रिय उपस्थित है, परंतु मन की बात सीधे शब्दों में नहीं कह पा रहा।

व्याख्या

कवि कहते हैं – हे निरमोही! तुम सामने हो, पर मैं अपने हृदय की बात कह नहीं पा रहा हूँ।

मेरे नयन ही कुछ कहने का प्रयास करते हैं, परंतु मुख से शब्द नहीं निकलते।

अर्थात् प्रेम इतना गहरा और संकोचपूर्ण है कि वाणी साथ नहीं देती; नेत्र ही मन की भाषा बन जाते हैं।

भाव

- संकोचयुक्त प्रेम।
- हृदय की व्याकुलता।
- नेत्र-भाषा की प्रधानता।

अलंकार

- व्यंजना – नेत्रों द्वारा मनोभाव प्रकट होना।
- श्रृंगार रस (संयोग पक्ष)।